IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 22, Issue 1, Ver. 1 (January. 2017) 62-64
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

व्यंग्य के प्रमुख स्तम्भ शरद जोशी के सामाजिक सरोकार और उनकी रचनाओं का परिचय

डॉ. महेश चन्द्र चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
नारायण कॉलेज,शिकोहाबाद

सारांश
स्वातन्त्र्योत्तर काल में जिन साहित्यकारों ने व्यंग्य लेखन की परम्परा को सुविकसित करते हुए व्यंग्य निबन्ध को एक स्वतंत्र गद्य विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने में अपना प्रशंसनीय सहयोग दिया है, उनमें शरद जोशी का नाम अग्रगण्य है। जोशी जी ने अपनी रचना धर्मिता से व्यंग्य को स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रदान कर साहित्य की अन्य विधाओं के समकक्ष खड़ा करने का बल प्रदान किया है। इन्होंने अपने समय की विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक गतिविधियों का मार्मिक उद्घाटन करते हुए उन पर कहीं मृदु और कहीं कठोर व्यंग्य किया है। 'धर्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण कुछ भी उनकी तीक्ष्ण व पैनी दृष्टि से बच नहीं पाया है।' इनके व्यंग्य लेखन की यात्रा का प्रारम्भ सर्वप्रथम सत्तर लघु व्यंग्य लेखों के संकलन 'परिक्रमा' सन् 1958 से होता है। ये व्यंग्य लेख उस समय की रचनाएँ हैं, जब स्वयं जोशी जी ऐसी व्यंग्य रचनाओं को 'नटखट लघु निबन्ध' की संज्ञा देते थे। इसके पश्चात् जोशी जी के लेखन में उत्तरोत्तर प्रौढ़ता आती चली गयी और उन्होने हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं की व्यापक परिक्रमा की। सन् 1971 में उनके दो व्यंग्य निबन्ध संग्रह 'किसी बहाने' और 'जीप पर सवार इल्लियाँ' प्रकाश में आये। तत्पश्चात् 'रहा किनारे बैठ' 1972, 'तिलस्म' 1973, 'दूसरी सतह' 1975, एवं 'यथा सम्भव' 1985, 'हम भ्रष्ट के भ्रष्ट हमारे' 1987 प्रकाशित हुये। अपने इन व्यंग्य संग्रहों में संकलित रचनाओं के माध्यम से जोशी ने व्यंग्य शिल्प को नूतन आयाम दिये हैं।

प्रस्तावना

अपने लेखन के 'परिक्रमा' काल में शरद जोशी ने आकार की दृश्टि से छोटी, परन्तु मनोरंजन तथा प्रहार की दृश्टि से स्तरीय एवं सशक्त व्यंग्य रचनाएं लिखीं। समाज और परिवार में उपलब्ध अनेकानेक प्रवृत्तियों और विसंगतियों पर उन्होंने अपनी पैनी दृश्टि डाली और बड़े आराम के साथ पिन से लेकर साबुन और आम तक की रोचक व्याख्या 'परिक्रमा' की रचनाओं में की है। इन रचनाओं में इनके मनोरंजन और प्रहारक जीवन–दर्शन की जो झांकी मिलती है उसी का व्यापक विस्तार एवं पैनापन परवर्ती व्यंग्य संग्रहों की रचनाओं में सामने आया है। अपनी व्यंग्य रचनाओं के आधार पर शरद जोशी की गणना आज के उन प्रमुख व्यंग्यकारों में की जाती है, जिनकी पैनी और तीक्ष्य दृश्टि ने राजनीति, समाज और साहित्य की विविध विसंगतियों को अत्यन्त गहराई से देखा और परखा है। जागरूक व्यंग्यकार की समस्त विशेशताएँ जोशी जी में हैं। यही कारण है कि इनकी सभी रचनाएँ कचोटने और प्रहार करने का दायित्व एक साथ निभाती है। डॉ0 संतबख्श सिंह इनकी व्यंग्य रचनाओं को कहानियों की संज्ञा देते हैं–'कोई ठोस कथानक, वातावरण और चरित्रादि प्रस्तुत करना उनकी कहानियों का लक्ष्य नहीं है, बल्कि मात्र व्यंग्यों से पाठक की संवेदना जगाना इनकी कहानियों का लक्ष्य रहा है।'

शरद जोशी का कथ्य व्यंग्य की सामाजिक चेतना और स्थायी समस्याओं पर आधारित है। प्रख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के सामने आपने भी सामयिक विशयों पर भरपूर कलम चलायी है। आज के जीवन और जगत् से सम्बन्धित शायद ही कोई ऐसी विसंगति बची हो, जिस पर उनकी तीक्ष्ण और व्यापक दृश्टि न पड़ी हो और उनके व्यंग्य का विशय न बनी हो। 'किसी बहाने' और 'जीप पर सवार इल्लियाँ' सन् 1971 उनके प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह हैं। इन संग्रहों में जोशी जी की दृश्टि की व्यापकता को देखा जासकता है। छोटी से छोटी और बड़ी प्रत्येक असंगति–विसंगति को उन्होंने व्यंग्य की बारीक नोंक से कुरेदकर यथातथ्य रूप में उसे नंगाकर समाज के सामने प्रस्तुत किया है। 'किसी बहाने' उनके 21 व्यंग्य लेखों का संग्रह है। 'पुराने पेड़ की बातें', 'अमरता के अहसास की भयावनी रात', 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं के पत्र', 'पान के बहाने कविता और कर्म पर एक बहस', 'भोंपू बजाने की सुप्त कला', 'मेघदूत की समीक्षा', 'आये न बालम बादा करके', 'चश्मा ईसवगोल' और 'निर्मल का मुटापा', 'गोशाला के प्रबन्धक', 'बैठे से रिसर्च भली', 'नाटककार', 'एक नाजुक सवाल पर भूत–प्रेतों से बातचीत', 'विमानों की ओट में', 'हास्यरस की अफसोस शाखा', 'आग लगने पर कविधर्म', 'अंक', 'अंगूर अण्डा', 'एक फिल्म जो उसने देखी थी', 'सोन चिरैया वाले', 'गीतकार निरंजन जी', और 'उस मामले में वार्तालाप'।

इसमें अधिकांश लेख साहित्यिक समस्याओं पर आधारित हैं। कुछ रचनाओं में प्रणय, रोमांसपूर्ण श्रृंगारिक विषयों का बाहुल्य है। कहीं–कहीं सामाजिक समस्याओं की मन्द ध्वनि है। लेखक की सूझें वास्तव में चमत्कारिक हैं। अपने दाम्पत्य

जीवन में वह हिन्दी साहित्य के चारों कालों को चरितार्थ करता है। कभी भक्ति ;व्यक्ति पूजा, कभी रीति–रिवाज रहस्य, फिर कभी वीरगाथा कालीन गृहकलह प्रवृत्ति और अन्ततः आधुनिक बोध या अबोध। 'रिसर्च' को लक्ष्य करके लेखक के प्रहार बड़े मर्मान्तक हैं। इसी प्रकार पेशेवर नाटककारों और मंचीय गीतकारों से सम्बन्धित व्यंग्योक्तियाँ भी प्रशंसनीय हैं। 'जीप पर सवार इल्लियाँ' निबन्ध में लोकहित की रक्षा और देश के विकास की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ढोने वाला अधिकारी वर्ग मात्र अपनी स्वार्थपूर्ति में संलग्न है और देश के विकास की खेती को इसी तरह चाट रहा है जैसे इल्लियाँ फसल को चाट जाती हैं। संग्रह का अन्य निबन्ध 'कस्बे का सिनेमा–मैनेजर' सामाजिक और व्यावसायिक आचरण पर कई प्रश्न चिन्ह लगाता है। इसी संग्रह के 'वर्मा जी, चुनाव और टू टूँ', ख्यालीराम जी का दल बदलना, राजनीतिक हलचलः नगर संस्करण आदि निबन्ध आज के राजनीतिक नेताओं की गतिविधियों में निहित विभिन्न विसंगतियों को उजागर करते हैं। इसी प्रकार 'एक मिनी भ्रष्टाचार' निबन्ध में व्यक्ति की नैतिकता व्यंग्य का लक्ष्य बनी है।

सन् 1972 में प्रकाशित 'रहा किनारे बैठ' संग्रह में 'झरता नीमः शाश्वत थीम', 'एक ठिठुरते हुए दिल की डायरी', 'एक सफल वर्श का लेखा जोखा', 'सितारे सुनने की पोशाक', 'ट ठ ड ढ पर भाषण', 'बोतलों का संगीत सुनकर', 'विज्ञापित में', 'कोमलकान्त रोग और माधुरी दबाएँ', 'मेरे क्षेत्र के पति', 'उसके डोरे', 'झझरने का', 'यदि महाभारत फिर से लिखा जाये', 'सवालों में से उठते सवाल', 'अफसर', 'जिन्दगी को कुरेदती हुई कला', 'न खड़े होने का दर्द', 'मैं ओलंम्पिक नहीं गया', 'आशा, विश्वास अन्यथा कश्ट और क्षमा', 'घास छीलने का पाठ्यक्रम','तुम कब जाओगे अतिथि', 'छाता हाथ में लेकर', 'बरसात का एक दिन', 'फरमाइशें....लगातार फरमाइशें', 'उपमाओं की उपयोगिता' तथा 'पराये पत्रों की सुगन्ध' कुल अट्ठाइस निबन्ध संग्रहीत हैं। इन निबन्धों में लेखक ने राजनीति, समाज, धर्म आदि से सम्बन्धित छोटी–से–छोटी और बड़ी–से–बड़ी विसंगति को लक्ष्य बनाकर उस पर प्रहार किये हैं। सन् 1973 में प्रकाशित संग्रह 'तिलस्म' के 'तिलस्म','अतृप्त आत्माओं की रेलयात्रा', 'यमदूत और नर्स', 'मुद्रिका रहस्य', 'बुध के दाँत', 'हिटलर और आँसू', 'तम्बाकू बाला', 'भगवान और मुर्गा', 'वर्जीनिया बुल्फ से सब डरते हैं', 'पुलिया पर बैठा आदमी', 'सारी बहस से गुजरकर', 'कैसा जादू डाला', 'एक बैले की तैयारी', 'चाँद पर'तथा 'प्रेम कथा प्रपत्र शैली' में जोशी जी की प्रतिभा को देखा जा सकता है। सन् 1975 में प्रकाशित 'दूसरी सतह' के सभी निबन्ध अपेक्षाकृत प्रहार की दृश्टि से तीक्ष्ण व गहरे अधिक है। इस संग्रह में इनके कुल छब्बीस निबन्ध संग्रहीत हैं–'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे', 'बाढ़ में लंच', 'काफी हाउस में चार व्यक्ति', 'बड़ी चेताबनी', 'लौट के आजा मेरे गीत', 'दीर्घायु और पत्र की आत्मा', 'वर्ष पच्चीसवाँ', 'सिक्का उठाने के बाद', 'बे बैठे थे खड़े', 'मौका बिदाई श्री निपसन', 'एक ऐतिहासिक सन्धि में मेरा योगदान', 'ब्लैक आउट', 'आविद और मैं', 'मेरे कटि में फँसा सातवाँ बेड़ा', 'उत्तम शिक्षा व्यवस्था', 'शीघ्र प्रवेश लें', 'इस विद्वान से उस विद्वान तक', 'हमें और रद्दी चाहिए', 'पद्मभूषण', 'पद्मश्री', 'पी–एच0डी0 टिकिटार्थी', 'उनके उपदेशों का मारा', 'आवाज की दुनियाँ', 'आर्य पुत्र दे चुके परीक्षा', 'अनशन और आश्वासन', 'एक क्रिकेट मैच', 'आम चूसने से पहले और बाद', 'सो बीना', 'हमारे शहर की हड़ताल', 'खाली पीली बीम वाली एक बम्बइया शाम' इसी प्रकार 'यथा सम्भव' में भी विभिन्न विसंगतियों से सम्बन्धित अनेक व्यंग्य कसने में शरद जोशी ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की हे। व्यंग्यकार वास्तव में सच्चा समाज सुधारक होता है। इसलिए उसे समाज की स्थिति के विपरीत जो भी कुछ दिखाई देता है अथवा जिसे भी वह समाज के लिए अहितकर समझता है, उस पर चोट करता है, उसे समाप्त करने का प्रयास करता है।

1988 में प्रकाशित 'झरता नीमः शाश्वत थीम' में समाज के विविध पक्षों की तीखी आलोचना है। परन्तु अपने तीखेपन को छिपाये बिना भी कटुता और अमर्यादित भर्त्सना से उसे दूर रखा है। सन् 2000 में 'यत्र–तत्र–सर्वत्र' संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें कुल एक सौ एक रचनाएँ संग्रहीत हैं। 2001 में प्रकाशित 'पिछले दिनों' ऐसे व्यंग्य लेखों का संग्रह है जो एक ओर सामाजिक स्थितियों को नई दृश्टि देते हुए सही दिशा की ओर इंगित करते हैं तो दूसरी ओर अपनी तीक्ष्णता और पैनेपन से भी पाठक को प्रभावित करते हैं। 2005 में प्रकाशित 'जादू की सरकार' में अब तक के अप्रकाशित व्यंग्य लेखों का संकलन है। रोजमर्रा के जीवन संदर्भों को आधार बनाकर लिखे गये इन लेखों में चुभन भी है और गुदगुदाहट भी। इनमें देश की शासन–व्यवस्था की खामियों पर व्यंग्य है। उनके व्यंग्य सीधे चोट नहीं करते, बल्कि अन्तर्मन को झकझोरते हैं। 2008 में 'यथासमय' संग्रह आया। इस संग्रह में उनकी लेखनी ने यत्र तत्र सर्वत्र फैले भ्रश्टाचार, शोशण, विकृति और अन्याय पर जमकर प्रहार किया है।

2008 में ही 'नावक के तीर' संग्रह प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त 2008 में ही 'प्रतिदिन';तीन खण्ड प्रकाशित हुआ। 'प्रतिदिन' में शरद जोशी ने सात सालों तक 'नवभारत टाइम्स' में जो लेख लिखे थे, उनका संकलन है। इन लेखों का पुनर्पाठ शरद जोशी की विलक्षण प्रतिभा से साक्षात्कार कराता है। इनके अतिरिक्त 2009 में शरद जोशी के 'दो व्यंग्य नाटक' नामक पुस्तक प्रकाशित हुयी, जिसमें 'अन्धों का हाथी' और 'एक था गधा उर्फ अला दाद खाँ' दो नाटक संग्रहीत हैं।

जोशी जी के विभिन्न संग्रहों में संकलित निबन्धों को पढ़ने से हम इस निश्कर्श पर पहुँचते हैं कि समाज, राजनीति, अर्थ, धर्म, नैतिकता, साहित्य, संस्कृति आदि से सम्बन्धित अनेकानेक विसंगतियाँ उनकी व्यंग्य रचनाओं का आलम्बन बनी है। व्यंग्य के सहारे जो कुछ तोड़ डालने योग्य है, उसे तोड़ने की जोरदार सिफारिश उन्होंने की है। वनस्पति की कमी से लेकर परमश्री वालों की धरा तक को व्यंग्य का आश्रय बनाया गया है। जोशी जी की व्यंग्य रचनाओं के सन्दर्भ में यह भी

एक स्थापित सत्य है कि उनमें कभी–कभी हास्य व्यंग्य का सहचर बनकर ही आया है। विशुद्ध हास्य की सृश्टि जोशी जी का लक्ष्ण कभी नहीं रही है। सार्थक और प्रभावकारी व्यंग्य ही उनके लेखन का प्रधान धर्म रहा है।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि व्यंग्य की व्यापक परिधि के होते हुए भी उन्होंने लक्ष्य के साथ शिल्प को भी अत्यधिक महत्व दिया है। यहाँ तक कि शिल्प को सजाने–सँवारने के चक्कर में उन्होंने कभी–कभी कथ्य को भी ताक पर रख दिया हे। वास्तव में उन्होंने हिन्दी की व्यंग्य विधि को शिल्प की सर्वाधिक कलात्मकता प्रदान की है। उनके व्यंग्य शिल्प ने रचना विधान ही नहीं, अभिव्यंजना की दिशा में भी नवीन गवाक्षों को खोला है। उनकी अभिव्यंजना शैली का एक उदाहरण दृश्टव्य है–
''उनकी बस में बैठ उज्जैन से इन्दौर जाते समय मैंने उनका कार्यक्रम पहली बार सुना तो वह वास्तव में एक स्वर्णिम अनुभव था। उज्जैन के बस स्टैण्ड पर उन्होंने अलाप लिया और फ्रीगंज का पुल पार करने तक बहुत सीधी अंगुलियाँ और हथेली से वे समां बांध चुके थे। डेढ़ घण्टे में हम लोग सीबर जाकर लगे, तब मैंने उन्हें बधाई दी कि ऐसा भोंपू न भूतो न भविश्यति।''

यह रोचकता और संयत भाशा–शैली शरद जोशी की निजी सम्पत्ति है। शिल्पवत्ता के लिए उन्होंने नूतन प्रयोगों के साथ ही साथ पुरानी कथ्य शैली का नया आयाम भी प्रस्तुत किया है। पौराणिक और जातक संदर्भों पर आधारित आधुनिक व्यंग्य की सर्जना भी उन्होंने की है और पुरानी वर्णन शैली को भी नवीन परिवेश में अंकित किया है, यथा –
''ए सखी, आज चहुंदिसि यह शोर कैसा ? बगुलों के समान श्वेत परिधान धारे कार्यकर्ताजनों की पाँत कहाँ प्रयाण कर रही है। रसिक जन आज रसिकता छोड़कर राजनीति की चर्चा में काहे मगन हैं।''

निश्कर्ष यह है कि व्यंग्य शिल्प औरव्यंजित सामग्री के आधार पर शरद जोशी को हिन्दी का एक जागरूक व प्रतिनिधि व्यंग्यकार कहा जा सकता है। सामाजिक आचरण, नेताओं का चरित्र और प्रवृत्ति, लाल फीताशाही की कमजोरियाँ, साहित्यकारों के खोखलेपन की स्थितियाँ, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों आदि सभी को उन्होंने पूरे कौशल के साथ व्यंग्य का निशाना बनाया है। अपने आस–पास के समाज में घटित होने वाली प्रत्येक छोटी–बड़ी घटनाओं को उन्होंने व्यंग्य के विशय स्वरूप ग्रहण किया है और उनमें निहित अनेकानेक विसंगतियों पर चोट की है। अपने व्यंग्य संग्रहों व तमाम पत्र–पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी हुई असंख्य व्यंग्य रचनाओं के कारण शरद जोशी ने हिन्दी की व्यंग्य विधा को अपनी विशिश्ट शैली में प्रौढ़ता एवं उदात्तता प्रदान की है। जोशी जी हिन्दी के प्रतिनिधि व्यंग्यकारों की प्रथम पंक्ति के सुधी हस्ताक्षर हैं।

सन्दर्भ सूची

1. गर्ग, शेरजंग : स्वातंन्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, पृ0 75
2. वर्मा, भगवतीचरण : साहित्य की मान्यताएँ, पृ0 114
3. गर्ग, शेरजंग : स्वातन्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, पृ0 75
4. नागरी पत्रिका;बेढव स्मृति अंकद्ध, पृ0 56
5. गर्ग, शेरजंग : स्वातन्र्योत्तर हिन्दी कविता मेंव्यंग्य, पृ081
6. श्रीवास्तव, जी0पी0 : हास्य रस, पृ0 18
7. कन्हैया लाल नन्दन : श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएँ, पृ0 07
8. अमृत रायः नई कहानियाँ, नव0 1969, पृ0 06
9. गोपाल प्रसाद व्यास : साप्ताहिक हिन्दुस्तान –24 मार्च, 1968, पृ0 8
10. डॉ0 मलय : व्यंग्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ0 155
11. घोश, श्यामसुन्दर : व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों, पृ0 55
12. गर्ग, शेरजंग : व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न, पृ0 86